इकाई 17 मङ्गलाचरण और कविवंशादि वर्णन

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य

17.1 प्रस्तावना

17.2 मङ्गलाचरण के लक्षण

17.3 मङ्गलाचरण के प्रकार

17.4 कविवंशादिकवर्णन –

17.5 सारांश

17.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

17.7 अभ्यास प्रश्न

17.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप :

- मङ्गलाचरण का लक्षण जान सकेंगे।
- मङ्गलाचरण के विविध प्रकारों को जान सकेंगे।
- कवि से पूर्व कवियों को जान सकेंगे।
- कवि का वंशादि परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- महाकवि द्वारा प्रयुक्त शैली को जान सकेंगे।
- गद्य तथा पद्यों में प्रयुक्त अलङ्कारों को जान सकेंगे।
- पद्यों में प्रयुक्त रस को जान सकेंगे।
- पद्यों में प्रयुक्त छन्द को जान सकेंगे।

17.1 प्रस्तावना

मङ्गलाचरण मङ्गल का प्रतीक है। मङ्गलाचरण करने से विघ्न दूर हो जाते हैं। मङ्गलिक कार्यों में मङ्गलाचरण का पालन विघ्न का निवारण ग्रन्थ की निर्बाध पूर्णता तथा पूर्वाचार्यों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए किया जाता है।

किसी भी कार्य के आरम्भ करने से पूर्व मङ्गलाचरण विघ्न विघात सामर्थ्य प्रतिपत्ति सूचक है। सम्पूर्ण पापों के निवारणार्थ अभीष्ट देवता के प्रति विनम्रतापूर्ण प्रणति निवेदन के साथ मङ्गल किया जाता है।

''समाप्तिकामो मङ्गलमारचरेत्।'' अर्थात् समाप्ति तक निर्विघ्नता को चाहने वाले को मङ्गल का आचरण करना चाहिए।

17.2 मङ्गलाचरण का लक्षण

मङ्गलाचरण के संदर्भ में यहां भाष्यकार लिखते हैं –

मङ्गलादीनि हि शास्त्राणि प्रथन्ते वीरपुरुषाणि च भवन्ति।

आयुष्मत्पुरुषाणि च अध्येतारश्च सिद्धार्थाः यथा स्युः।

मङ्गल शब्द कल्याणकारी तथा शुभसूचक हैं। ग्रन्थ तथा जन हितार्थ लिखा तथा पढ़ा जाता है। मङ्गलाचरण में अपने इष्टदेव का स्मरण कर उनको प्रणाम किया जाता है। इसमें प्रायः रत्नत्रय प्रदाता देव शास्त्र तथा गुरु के गुणों की स्तुति की जाती है। इससे कल्मषों की मन्दता होती है। इससे परिणामों में निर्मलता आती है इसीलिए आचार्यो का कथन है–

अपराजितः मन्त्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलं गतः।।

आचार्य वीर सेन ने मंगल शब्द की निरुक्ति करते हुए लिखा है–

मंगशब्दोऽयमुदिष्टः पुण्यार्थस्याभिधायकः।
तल्लातीत्युच्यते सिद्धिर्मगलं मंगलार्थिभिः।

अर्थात् मंग शब्द पुण्य रूप अर्थ का प्रतिपादक है। जो पुण्य को लाने वाला है। उसे मंगल के इच्छुक सत्पुरुष मङ्गल कहते हैं अथवा उपचार से पाप को मल भी कहा जाता है इसलिए जो पाप का गालन करा दे, अर्थात् नाश करे उसे भी मङ्गल कहा जाता है।

17.3 मङ्गलाचरण के प्रकार

''मङ्गलं त्रिविधम्'' अर्थात् मङ्गलाचरण तीन प्रकार के होते हैं।

1. नमस्कारात्मक (अर्थात् जहाँ नमस्कार किया जाता है)
2. वस्तुनिर्देशात्मक (जहाँ विषयवस्तु का निर्देश हो)
3. आशीर्वादात्मक (जहाँ सुख के हित की तथा सभी के कल्याण की बात की गई हो। वहाँ उसे आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण कहते हैं।)

नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण

इसमें अपने इष्ट के प्रति प्रणति निवेदन किया जाता है। जैसे लघुसिद्धान्त कौमुदी में किया गया है।

नत्वा सरस्वतीं देवीं शुद्धां गुण्यां करोम्यहम्।
पाणिनीयप्रवेशाय, लघुसिद्धान्तकौमुदीम्।।

वस्तु निर्देशात्मक मङ्गलाचरण–

क्रियाकलापप्रतिपत्तिहेतु, संक्षिप्तसारार्थविलासगर्भम्।
अनन्तदैवज्ञसुतः स रामो मुहूर्तचिन्तामणिमातनोति।

यहाँ पर विभिन्न क्रियाकलापों का निर्देश है अतः यह वस्तुनिर्देशात्मक है।

आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण –

इसमें ध्वन्यालोक के मङ्गलाचरण को ले सकते हैं जैसे–

स्वेच्छाकेशरिणः स्वच्छस्वच्छायायासितेन्दवः।
त्रायन्तां वो मधुरिपोः प्रपन्नार्तिच्छिदो नखाः।।

यहाँ कहा जा रहा है कि अपनी इच्छा से केशरी अर्थात् सिंह का रूप धारण किए हुए भगवान मधुरिपु के स्वच्छ अपनी छाया से इन्द्र को आयासित अर्थात् खिन्न करने वाले तथा प्रपन्न शरणागतों जनों की आर्ति का छेदन करने वाले नख आप लोगों की रक्षा करें। यह आशीर्वादात्मक कोटि का मङ्गलाचरण है। नलचम्पू का मङ्गलाचरण नमस्कारात्मक है।

जयति गिरिसुतायाः कामसन्तापवाहि।
न्युरसि रसनिषेकश्चान्दनश्चन्द्रमौलिः।।
तदनु च विजयन्ते कीर्तिभाजां कवीना।
मसकृदमृतबिन्दुस्यन्दिनो वाग्विलासाः।।1।।

अन्वयः गिरिसुतायाः कामसन्तापवाहिनि उरसि चान्दनः रसनिषेकः चन्द्रमौलिः जयति। तदनु च कीर्तिभाजां कवीनाम् असकृद् अमृतविन्दन् स्यन्दयन्ति। (तादृशाः) वाग्विलासाः विजयन्ते।

शब्दार्थ : गिरि सुतायाः=हिमालय की पुत्री पार्वती के अथवा भीम की पुत्री दमयन्त्री के, कामसंतापवाहिनि=कामदेव के द्वारा उत्पन्न सन्ताप को धारण करने वाले, उरसि= हृदय पर, चान्दनः = चन्द्रन का, रसनिषेकः =रस सिञ्चित, चन्द्रमौलिः = चन्द्रमा जिसके मस्तक पर है अर्थात् भगवान् शिव, तदनु=उसके बाद, च=और, कीर्तिभाजाम्=यशपात्रों के, कवीनाम्=कवियों के, असकृत्=अनेक बार, अमृतबिन्दून्=अमृत की बूंदों को, स्यन्दयन्ति=बहाते हैं, वाग्विलासाः= वाणी के विलास अर्थात् काव्य नाटक आदि। विजयन्ते= उत्कृष्ट है।

अनुवाद : हिमालय की पुत्री पार्वती जी की कामदेव द्वारा उत्पन्न की गयी पीड़ा को धारण करने वाले वक्षस्थल के लिए भगवान् चन्द्रमौलि (शिवजी) चन्दन जल के समान शान्ति देने वाले हैं। ऐसे भगवान शिव की जय हो। उनके बाद यशपात्र कवियों के अनवरत अमृत बिन्दुओं की वर्षा करने वाले वाणी के विलास अर्थात् काव्य नाटक अदि रचनाओं की जय हो अथवा उत्कर्ष युक्त हों।

श्लिष्टार्थ : यदि ''गिरिसुतायाः'' पद का अन्य अर्थ भीम की पुत्री दमयन्ती के लिए लिया जाय तथा ''चन्द्रमौलिः'' पद से चन्द्रवंश शिरोमणि राजा नल का ग्रहण हो तो पद्य के पूर्वार्द्ध से यह अर्थ प्रस्फुटित होगा – ''भीम पुत्री'' दमयन्ती की कामपीड़ा को धारण करने वाले वक्षस्थल के लिए जिस नल का स्पर्श चन्दन जल के सिञ्चन सा शीतल है, सुखदायी है, ऐसे महाराज नल की जय हो।

वैसे ऐसा अर्थ ग्रहण करना असंगत नहीं है क्योंकि कोश वचन से गिरि राजा भीम का वाचक है। ''गिरिभीनृपे सूर्ये स्वभावे पर्वते जले'' और चन्द्रमौलिः समस्त पद का विच्छेद

पर ''चन्द्रवंशस्य मौलिः श्रेष्ठः यः सः नलः।'' चन्द्र वंशशिरोमणि महाराज नल अर्थ भी यहां प्राप्त होता है।

यह पद्य मङ्गलाचरण है भारतीय परम्परा में कार्य की निर्विघ्न परिसमाप्ति के लिए मङ्गल विधान सर्वत्र विद्यमान है। तथैव कवि कर्म की निर्विघ्न परिसमाप्ति के निमित्त मङ्गलाचरण का नियम है।

ग्रन्थादौ ग्रन्थमध्ये ग्रन्थान्ते च मङ्गलमाचरणीयम्।

अर्थात् ऐसा नियम है कि रचना के आदि, मध्य तथा अंत में मङ्गलाचरण करना चाहिए। ऐसी परम्परा कई ग्रन्थों में परिलक्षित होती है। परन्तु प्रायः अधिकाशंतः रचनाओं में आदि में ही मङ्गलाचरण प्राप्त होता है। महाकवि त्रिविक्रमभट्ट ने भी अपनी रचना नल चम्पू में इसी परम्परा का परिपालन किया है। यहाँ पर जयति पद से नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण है। साथ ही गिरिसुतायाः तथा चन्द्रमौलिः पदों का श्लिष्टार्थ ग्रहण करने पर वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण भी कहा जा सकता है। वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण स्वीकार करने पर, कथावस्तु का सङ्केत इस प्रकार सम्भव है–

I. प्रस्तुत काव्य नल और दमयन्ती की कथा पर आधारित है।

II. यह काव्य श्रृङ्गार रस से सिक्त है।

III. राजा नल सर्वोत्कृष्ट राजा है।

निष्कर्षतः मङ्गलाचरण समीचीन और उपयुक्त है।

अलङ्कार : इस पद्य में रूपक तथा श्लेष अलङ्कार का प्रयोग हुआ है। उदात्त गुणों के वर्णन होने से उदात्तालंकार है। रूपक में भी उसके भेदों में से परम्परित रूपक की सुन्दर छटा विद्यमान है।

छन्द – इस पद्य में मालिनी वृत्त है जिसका लक्षण ''न न म ययुतेयं मालिनीभोगिलोकैः'' अर्थात् जहां पर नगण, नगण, मगण, तथा यगण हों वहाँ मालिनी वृत्त होता है।

जयति मधुसहायः सर्वसंसारवल्ली।
जननजरठकन्दः कोऽपि कन्दर्पदेवः।
तदनु पुनरपाङ्गोत्सङ्गसञ्चारितानां।
जयति तरुणयोषिल्लोचनानां विलासः।।2।।

अन्वय –मधुसहायः सर्वसंसारवल्ली जननजरठकन्दः कः अपि कन्दर्पदेवः जयति। तदनु पुनः अपाङ्गोत्सङ्गसञ्चारितानां तरुणयोषित् लोचनानां विलासः जयति।

शब्दार्थ – मधुसहायः =वसन्तसखा, सर्वः संसारः एव वल्ली, तस्याः =सम्पूर्ण संसार रूपी लता के, जनने = उत्पन्न करने में, जरठकन्दः = कठोर मूल, कोऽपि = अपूर्व, कन्दर्पदेवः, जयति = उत्कर्षशाली हों। तदनु = उसके पश्चात्, पुनः = फिर, अपाङ्गोत्सङ्गे = नेत्रों के किनारे वाले भाग रूपी अङ्क में, तरुणयोषितलोचनानां = युवतियों के नेत्रों के, सञ्चारितानां = होने वाले, विलासाः कटाक्ष आदि व्यापार, जयति = उत्कृष्ट हो अथवा उत्कर्ष को प्राप्त होवे।

हिन्दी अनुवाद – जिसका वसन्त जैसा सखा है तथा जो समस्त संसार रूपी लता के उत्पन्न करने के लिए कठोर जड़ (कन्द) के तुल्य है। ऐसे अपूर्व कामदेव की जय हो। अथवा उसके बाद पुनः युवतियों के नेत्र के छोर रूपी गोद से सञ्चालित होने वाले नेत्रों का कटाक्षादि व्यापार सर्वोत्कृष्ट होता है अथवा नेत्रकटाक्षादि व्यापार उत्कर्षशाली होवे।

पद्य विश्लेषण – प्रस्तुत पद्य का तात्पर्य यह है कि सम्पूर्ण सृष्टि के उत्पादक कामदेव हैं। यदि कामोत्पत्ति मानव मन में न हो तो सन्तानोत्पत्ति की इच्छा नहीं होगी। परिणामतः विकास अवरूद्ध हो जाएगा। अतः कामदेव को सृष्टि के कारण स्वरूप स्वीकार करना असंगत नहीं है और यह कामदेव विश्वविजयी है। समग्र सृष्टि पर इसका अमोघ प्रभाव है। अस्मात् अपूर्व शक्तिमत्ता की विद्यमानता तो स्वतः सिद्ध है। इस तथ्य को सर्वोत्कृष्ट व्यवहृत करके महाकवि ने यथार्थतः अत्युक्ति नहीं की है।

दूसरी उत्कृष्टता कवि रमणी नयन विलासों को सिद्ध करता है। काव्यप्रकाशकार आचार्य मम्मट ने ''कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे'' कहकर कान्ता की ही उत्कृष्टता सिद्ध की है।

अलङ्कार : इस पद्य में परम्परित अलङ्कार है। ''तत्परम्परितं श्लिष्टाश्लिष्ट शब्दनिबन्धनम्'' साथ ही वर्ण साम्य से अनुप्रास अलङ्कार है।

छन्द : इस पद्य में मालिनी छन्द है

अगाधान्तः परिस्पन्दं विबुधानन्दमन्दिरम्।
वन्दे रसान्तरप्रौढ़ं स्रोतः सारस्वतं वहत्।।3।।

अन्वय : अगाधान्तः परिस्पन्दं विबुधानाम् आनन्दमन्दिरम्, रसान्तरप्रौढ़ं वहत् सारस्वतम् स्रोतः (अहम्) वन्दे।

शब्दार्थ : अगाधान्तः =अन्तः करण (हृदय) में, असीमित अथवा असीमित गहराई वाले (नदी के अन्दर) परिस्पन्दम् =उत्पन्न चमत्कार वाला अथवा भंवर युक्त, विबुधानाम् = देवों का हंसों का अथवा रसिक जनो का, आनन्दमन्दिरम् =आनन्द की अथवा उत्पत्ति का स्थान, प्रौढम् = श्रृङ्गार आदि रसों के विस्तार से युक्त अथवा भूमि के अन्दर प्रवाहित जल धारा वाली। वहत् = परिवर्तित अथवा बहती हुई, सारस्वतं स्रोतः = सरस्वती नदी के स्रोत की अथवा वाणी के स्रोत की। अहं वन्दे = मैं वन्दना करता हूँ।

हिन्दी अनुवाद :

वाणी के पक्ष में – हृदय में विशिष्ट चमत्कार उत्पन्न करने वाले विद्वानों और देवताओं के हर्ष स्थान (श्रृङ्गार आदि) विभिन्न रसों की विविधताओं से समृद्ध सरस्वती (वाणी) के विकासशील प्रवाह को मैं त्रिविक्रम भट्ट प्रणाम करता हूँ।

सरस्वती नदी के पक्ष में– अथाह गहराई के मध्य तरङ्गित होने वाले राजहंसों के आनन्द के निकेतन, रसान्तर (पृथ्वी की बीच) में बड़ी प्रगल्भता से बहने वाली सरस्वती नदी के प्रवाह को मैं त्रिविक्रम भट्ट नमस्कार करता हूं।

यहां पर नदी के पक्ष में श्लिष्ट शब्द अगाधान्तपरिस्पदः (अथाह गहराई के बीच तरङ्गित होने वाले) विवुधानन्दमन्दिरम् (देवताओं के आनन्द निकेतन) रसान्तर प्रौढ़ः

(रसा–पृथ्वी के भीतर प्रौढ़) ''सारस्वतं स्रोतः'' बहते हुए सरस्वती नदी के प्रगाढ़(धारा को) प्रणाम करता हूँ।

वाणी के पक्ष में– अगान्धातपरिस्पन्दहृदय में विशिष्ट चमत्कार उत्पन्न करने वाला।) विवुधानन्दमन्दिर (विद्वानों के आनन्द का निकेतन) रसान्तर प्रौढ़ (श्रृङ्गारादि विभिन्न रसों की विविधताओं से समृद्ध) सरस्वती के विकासशील प्रवाह को प्रणाम करता हूँ।

अलङ्कार – यहाँ वर्णसाम्य से अनुप्रास अलङ्कार है।

छन्द – इस पद्य में अनुष्टुप् वृत्त है।

कविवंशादि वर्णन से पूर्व कवि अपने पूज्य कवियों का स्मरण करता है। उन्हें प्रस्तुत करना समीचीन होगा।

सदूषणापि निर्दोषा सखरापि सुकोमला।
नमस्तस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा।।11।।

अन्वय : सदूषणापि निर्दोषा, सखरा अपि सुकोमला, रम्या, रामायणी कथा, येन कृता, तस्मै नमः।

शब्दार्थ : सदूषणापि =दोषयुक्त होने पर भी अथवा दूषण नामक राक्षस के वृत्तान्त से युक्त होने पर भी, निर्दोषा = दोष रहित, सखरा = रुक्ष होते हुए भी अथवा खर नामक राक्षस के वर्णन से होते हुए भी, सुकोमला = मधुर वर्णों वाली, रम्या = सुन्दर, आकर्षक। रामायणी कथा = रामकथा, येन कृता = जिनके द्वारा रची गयी है। (उन महर्षि वाल्मीकि को) नमः = नमस्कार करता हूँ।

हिन्दी अनुवाद : दूषण होने पर निर्दोष खर (रुक्ष) होने पर भी कोमल, रमणीय रामायण की कथा जिसने रची उन महाकवि वाल्मीकि को प्रणाम है।

दूषण और खर शब्द आपाततः विरोध की प्रतीति कराते हैं। परिहार पक्ष में तो खर और दूषण शब्द से खर और दूषण नामक राक्षसों से तात्पर्य है। विभिन्न राक्षसों के उग्रता सम्पन्न एवं अनौचित्य बहुल चरित्रों को चित्रित करते हुए भी काव्य की रमणीयता जिस कवि ने सुरक्षित रखी वह महाकवि निश्चित ही परम अभिनन्दनीय है।

अलङ्कार – यहाँ पर विरोधाभास अलङ्कार है।

छन्द – इस पद्य में अनुष्टुप् वृत्त है।

''व्यासः क्षमाभृतां श्रेष्ठो वन्द्यः स हिमवानिव।
सृष्टा गौरीदृशी येन भवे विस्तारिभारता।।12।।

अन्वय : येन भवे श्रेष्ठो विस्तारिभारता, ईदृशी गौः सृष्टा सः क्षमाभृताम् श्रेष्ठः सःव्यासः हिमवान् इव वन्द्यः।

शब्दार्थ : येन=जिसके द्वारा, भवे= संसार में, विस्तारिभारता= अत्यधिक विस्तृत महाभारत रचना अथवा विस्तृत कान्ति वाली, इदृशी= इस प्रकार की, गौः=वाणी, सृष्टा=रची है, सः=वह, क्षमाभृताम् = पर्वतों में, श्रेष्ठः व्यासः = श्रेष्ठ महाकवि व्यास, हिमवान् इव = पर्वतराज हिमालय के समान, वन्द्यः = वन्दना के योग्य हैं।

हिन्दी अनुवाद–

व्यासपक्ष : क्षमाशील व्यक्तियों में श्रेष्ठ महर्षि व्यास हिमालय के समान वन्दनीय हैं जिन्होंने संसार में विशाल भारत (महाभारत) रूपी वाणी की रचना की।

हिमालय पक्षः पृथिवी को धारण करने वाले राजाओं में सर्वश्रेष्ठ हिमवत् पर्वतों में श्रेष्ठ हिमालय के समान वन्दनीय है। जिन्होंने विस्तृत कान्ति वाली गौरी का निर्माण किया जो भगवान शङ्कर में अनुरक्त है।

अलङ्कार : इस पद्य में विरोधाभास अलङ्कार है।

छन्द : इसमें अनुष्टुप् छन्द है।

कर्णान्तविभ्रमभ्रान्तकृष्णार्जुनविलोचना।
करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती।।13।।

अन्वय : कर्णान्तविभ्रमभ्रान्तकृष्णार्जुनविलोचना, कान्ता इव भारती कथा कस्य आह्लादं न करोति।

शब्दार्थ : कर्णान्तयोः =कुन्ती पुत्री कर्ण का अन्त हो जाने पर अथवा कानों तक फैले हुए (नेत्रों के), विभ्रमेण = विस्मय के कारण अथवा विलासों के कारण , भ्रान्ते = चञ्चल होने पर, कृष्णार्जुने = कृष्ण तथा अर्जुन के अथवा नीली कोरों वाले तथा श्वेत भागयुक्त। विलोचने = नेत्र रहित धृतराष्ट्र का जिसमें वर्णन किया गया है अथवा नेत्रों वाली। कान्ता इव = स्त्री के समान, भारती = महाभारत की, कथा =कथा, कस्य =किसे, न = नहीं, अह्लादम् =प्रसन्नता को, करोति = करती है।

हिन्दी अनुवाद :

महाभारत के पक्ष में– कर्ण के युद्ध में मारे जाने पर विस्मित होकर कृष्ण अर्जुन तथा धृतराष्ट्र आदि जिसमें इधर उधर घूमते रहे। ऐसी महाभारत की कथा किसे आह्लाद नहीं प्रदान करती अर्थात् सभी को प्रसन्नता देती है।

कान्ता पक्ष में– कान पर्यन्त विलास से स्फुरित (चञ्चल) काली तथा सफेद पुतलियों वाली कान्ता के समान कथा किसे आह्लादित नहीं करती। अर्थात् सभी को आनन्द देती है।

अलङ्कार : यहाँ इस पद्य में श्लिष्टोपमा अलङ्कार है।

छन्द : इस पद्य में अनुष्टप वृत्त का प्रयोग हुआ है।

शश्वद्बाणद्वितीयेन नमदाकारधारिणा।
धनुषेव गुणाढयेन निःशेषो रञ्जितो जनः।।14।।

अन्वय : शश्वद् बाणद्वितीयेन नमादाकारधारिणा गुणाढ़येन धनुषा इव निःशेषः जनाः रञ्जितः।

शब्दार्थ : धनुष इव = धनुष के समान, शश्वद्=निरन्तर, बाणद्वितीयेन =

बाणभट्ट कवि के साथ अथवा बाण के द्वारा, नमदाकारधारिणा = अत्यधिक विनम्र स्वभाव धारण किए हुए अथवा झुके हुए आकार को धारण किए हुए, गुणाढ्येन = गुणाढ्य कवि द्वारा अथवा प्रत्यञ्चा द्वारा। निःशेषजनः = सम्पूर्ण मनुष्य अथवा सम्पूर्ण योद्धा। रञ्जित = प्रसन्न अथवा (रण+जितः) युद्ध में जीत लिए जाते हैं।

हिन्दी अनुवाद :

कवि पक्ष में– निरन्तर बाण कवि को अपने साथ रखने वाले, अति विनीत स्वभाव वाले गुणाढ्य नामक कवि ने सभी लोगों को अपनी कविता द्वारा रञ्जित कर दिया है अर्थात् प्रसन्न कर दिया है।

धनुष के पक्ष में– निरन्तर बाणों को अपने ऊपर चढ़ाये रखने वाले बाण खींचने के समय झुके हुए आकार वाली डोरी से सुदृढ़ धनुष से सम्पूर्ण शत्रु वर्ग को जीत लिया।

अलङ्कार : बाण, नमदाकारधारिणा गुणाढ्येन आदि पदों में तथा रञ्जितः पद में सभङ्गश्लेष अलंकार है।

छन्द : यहाँ पर अनुष्टुप् वृत्त है।

17.4 कविवंशादिकवर्णन

अस्ति समस्तमुनिमनुजवृन्दवृन्दारकवन्दनीयपादारविन्दस्य भगवतो विधेर्विश्वव्यापिव्यापारपारवश्यादवतीर्णस्य संसारचक्रे क्रतुक्रियाकाण्डशौण्डस्य शाण्डिल्यनाम्नो महर्षेवंशः।

शब्दार्थ : वृन्दारकैः = समूह द्वारा, वन्दीय =पूज्य, पादरविन्दस्य = चरण कमल वाले, भगवतो विधेः = भगवान ब्रह्मा जी के, विश्वव्यापिव्यापरस्य = संसार व्यापी कार्य की, पारवश्याद् = पराधीनता से, अवतीर्णस्य = आए हुए अथवा उत्पन्न हुए, क्रतुक्रियायाम् = यज्ञक्रिया में, शौण्डस्य = चतुर अथवा कुशल,, शाण्डिल्यनाम्ना = शाण्डिल्य नाम वाला, महर्षेवंशः =महर्षि का वंश है।

हिन्दी अनुवाद : सम्पूर्ण मुनिजन मनुष्य कुल समूहों द्वारा पूजनीय कमल चरण वाले भगवान ब्रह्मा जी के संसारव्यापी कार्य की पराधीनता से उत्पन्न हुए यज्ञ क्रिया में कुशल शाण्डिल्य नाम वाले महर्षि का वंश था।

श्रूयन्ते च यत्र श्रवणोचिताश्चन्दनपल्लवा इव केचिदनूचानाः शुचयः सत्य वाचो विरञ्चिवर्चसोऽर्चनीयाचारा ब्रह्मविदो ब्राह्मणाः पुण्यजनाश्च न च ये लङ्कापुरुषाः, ससूत्राश्च न च ये लम्पटाः, प्रसिद्धाश्च न च ये लम्पाकाः, कामवर्षाश्च न च ये लङ्घना सन्मार्गस्य, नववयसोऽपि न च ये लम्बालकाः महाभारतिकाश्च न च ये रङ्गोपजीविनः, सेविताप्सरसोऽपि न च ये रम्भयान्विताः।

शब्दार्थ : श्रूयन्ते = सुने जाते हैं, यत्र=जहां, चन्दनपल्लवार इव = चन्दन के पत्तों के समान, अनूचाना = वेदपाठी, सत्यवाचः = सत्य बोलने वाले, विरञ्चिवसः = ब्रह्मतेजसमन्वित, अर्चनीय आचाराः = पूजनीय आचरण वाले, ब्रह्मविदः = ब्रह्म को जानने वाले, पुण्यजनाः = पुण्यवान् थे, अलङ्कापुरुषाः (अलम् +कापुरुषाः) = कायर पुरुष, लङ्कापुरुष =राक्षस, ससूत्राश्च = यज्ञोपवीतयुक्त अथवा चुगलखोर, येऽलम्पाकाः ये = जो, अलम्+पयः पर्याप्त वस्त्र वाले, लम्पटाः=लफंगे, प्रसिद्धाः = पके हुए अथवा संसार में प्रसिद्ध, मेऽलम्पाकाः अलम्+पाकाः = पर्याप्त पके हुए लम्पाकाः = लफंगे कामवर्षाश्च=इच्छानुसार वृष्टि करने वाले अथवा इच्छापूर्ति करने वाले। येऽलङ्घनाः = ये जो अलम+घनाः = बादल अथवा अ+लङ्घनाः= मार्ग आदि का अतिक्रमण करने वाले नहीं थे। नववयसोऽपि = नई उम्र होने पर भी अथवा अग्निहोत्र = करने वाले। मेऽलम्बालकाः (ये+लम्बालकाः) लम्बे बालों वाले (अलम्+बालकाः) बालक नहीं थे।

महाभारतिकाश्च = महाभारत कथा वाचक अथवा प्रसिद्ध भारत देश वाले। येऽरङ्गोपजीविनः (ये + रङ्गोपजीविनः) रङ्गमञ्च से जीविका चलाने वाले अथवा (ये+अरम्+गोपजीविनः) राजाओं से जीविका चलाने वाले नहीं थे। सेविताप्सरसो = सेविता+अपि+सरसोऽपि = सरोवरों का सेवन करते हुए भी अथवा सेविता + अप्सरसोऽपि = अप्सराओं का सेवन करते हुए भी। ये रम्भयान्विताः = रम्भया+अन्विताः =रम्भा नाम वाली अप्सरा से युक्त अथवा अरम्+भयान्विताः = भय से युक्त नहीं थे।

हिन्दी अनुवाद : जिस शाण्डिल्य वंश में कानो पर धारण करने योग्य चन्दन के पत्तों के समान कुछ, वेदपाठी (सामगान करने वाले) पवित्र, सत्य, भाषण करने वाले, ब्रह्म वर्चसी अर्थात् ब्रह्मतेज से समन्वित, पूजनीय आचरण वाले, ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण सुने जाते हैं। आशय यह है कि उस प्रसिद्ध शाण्डिल्य वंश में जिस प्रकार चन्दन के पल्लव कर्णाभूषण बनाने के योग्य होते हैं। उसी प्रकार सामवेद का विधिपूर्वक गान करने वाले ब्राह्मण कानों से धारण करने योग्य थे। अर्थात् उनके सामगान को सुनने की इच्छा होती थी। उस समय लोग सामवेदी ब्राह्मणों में उन्हें सर्वश्रेष्ठ रूप में जानते थे। ऐसे वेदपाठी ब्रह्मतेज से युक्त अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले, सभी के द्वारा सम्मान करने योग्य आचरण करने वाले पवित्र सत्यभाषण करने वाले तथा ब्रह्मतत्व जानने वाले ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण सुने जाते थे।

जानन्ति हि गुणान् वक्तुं तद्विधा एव तादृशाम्।
वेत्ति विश्वम्भरा भारं गिरीणां गरिमाश्रयम्।।18।।

अन्वय : तत् विधा एव तादृशाम् गुणान् वक्तुं जानन्ति हि विश्वम्भरा गिरीणां गरिमाश्रयम् भारं वेत्ति।

शब्दार्थ : तद्विधा एव = उन (शाण्डिल्यवंश में उत्पन्न पूर्वजों) के समान ही। तादृशाम् = उन जैसों के, गुणान्वक्तुम् = गुणों का वर्णन करने के लिए, जानन्ति = जानते हैं, गिरीणाम् = पर्वतों के, गरिमाश्रयम् = भारी पन के हेतु कारण रूप, भारम् = भार की, विश्वम्भरा = विश्व का भरण पोषण करने वाली पृथिवी, एव=ही, वेत्ति = जानती है।

हिन्दी अनुवाद : उन (शाण्डिल्य वंश में पैदा हुए मनुष्यों) के समान गुण वाले ही, निश्चित उन जैसों के गुणों का वर्णन करना जानते हैं। विश्व का भरण–पोषण करने वाली अथवा संसार के भार को वहन करने की सामर्थ्य वाली पृथिवी ही पर्वतों के भारीपन के कारण रूप भार को जानती है।

अलङ्कार : वर्णसाम्य के कारण अनुप्रास अलङ्कार है। साधारण धर्मों का अलग–अलग वर्णन होने से प्रतिवस्तूपमा अलङ्कार हैं।

छन्द : यहाँ पर अनुष्टुप् वृत्त है।

तेषां वंशे विशदयशसां श्रीधरस्यात्मजोऽभूद्
देवादित्यः स्वमतिविकसद्वेदविद्याविवेकः।
उत्कल्लोलां दिशि दिशि जनाः कीर्तिपीयूषसिन्धुः
यस्याद्यापि श्रवणपुटकैः कूणिताक्षाः पिबन्ति।।19।।

अन्वय : विशदयशसां तेषां वंशे श्रीधरस्यात्मजः स्वमति विकसद् वेदविद्याविवेकः देवादित्यः अभूत्। यस्य अद्य अपि कूणिताक्षाः उत्कल्लोलाम् कीर्तिपीयूषसिन्धुम् श्रवणपुटकैः पिबन्ति।

शब्दार्थ : विशदयशसाम् = चारों दिशाओं में फैले हुए यश वाले, तेषाम् = उनके, वंशे = वंश में, स्वमतिविकसद्वेदविद्याविवेकः =अपनी प्रतिभा से ही विद्या के सम्बन्ध में विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करने वाले, श्रीधरस्यात्मजः = श्रीधर का पुत्र, देवादित्यः अभूत् = देवादित्य हुआ, यस्य = जिसका,, दिशि दिशि = प्रत्येक दिशा में, उत्कल्लोलाम् = चञ्चल तरङ्गों वाले, कीर्तिपीयूषसिन्धुम् =यशरूपी समुद्र को, अद्यापि = आज भी, जनः = लोग, कूणिताक्षाः = आंखें बन्द करके, श्रवणपुटकैः = कान रूपी दोने से, पिबन्ति = पीते हैं।

हिन्दी अनुवाद : उन उज्ज्वल कीर्ति वाले चारों दिशाओं में फैले हुए यश वाले शाण्डिल्यगोत्रीय ब्राह्मणों के वंश में अपनी बुद्धि से वेद विद्या के द्वारा कर्तव्याकर्तव्य विवेक को विकसित करने वाले श्रीधर के पुत्र देवादित्य हुए। जिनके चारों दिशाओं में व्याप्त चञ्चल, ऊपर उठने वाले यश रूपी लहरों वाले समुद्र को आज भी मनुष्य अति आनन्द के कारण आँखें बन्द करके कानरूपी अञ्जलि अथवा दोनों से पीते हैं।

अलङ्कार : वर्ण साम्यता होने के कारण अनुप्रास अलङ्कार है।

छन्द : इस पद्य में मन्दाक्रान्ता वृत्त है। मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ ग युग्मम्।

तैस्तैरात्मगुणैर्येन त्रिलोक्यास्तिलकायितम्।
तस्मादस्मि सुतो जातो जाड्यपात्रं त्रिविक्रमः।।20।।

अन्वय –येन तैः तैः आत्मगुणैः त्रैलोक्याः तिलकायितम। तस्मात् जाड्यपात्रंम् त्रिविक्रमः सुतः जातः अस्मि।।

शब्दार्थ – येन = जिनके द्वारा, तैः तैः आत्मगुणैः = उन उन अपने गुणों से, त्रैलोक्याः = तीनों लोको के, तिलकायितम् = तिलक रूप में अर्थात् सर्वश्रेष्ठ, तस्मात् = उन देवादित्य से,, अहम् = मैं, जाड्यपात्रम् = मूर्खता का पात्र, त्रिविक्रम = त्रिविक्रम नाम वाला, सुतः जातोऽस्मि = पुत्र उत्पन्न हुआ है।

हिन्दी अनुवाद – उन उन अपने (दया, दाक्षिण्य, परोपकारादि) गुणों से तीनों लोकों के तिलक समान अर्थात् सर्वश्रेष्ठ उन (देवादित्य) से ही मैं मूर्खता का त्रिविक्रम नाम वाला पुत्र उत्पन्न हुआ है।

अलङ्कार – यहाँ उदात्त तथा व्यतिरेक अलङ्कार है।

छन्द – इस पद्य में अनुष्टुप वृत्त है।

सोऽहं हंसायितुं मोहाद् बकः पङ्गुर्यथेच्छति।
मन्दधीस्तद्वदिच्छामि कविवृन्दारकायितुम्।।21।।

अन्वय–यथा पङ्गु बकः मोहात् हंसायितुम् इच्छति तद्वत् सः मन्दधीः अहं कविवृन्दारकायितुम् इच्छामि।

शब्दार्थ – यथा = जैसे, पङ्गु बकः = लंगडा बगुला, मोहात् = मोह अथवा अज्ञान से, हंसायितुम् = हंस बनने की, इच्छति =इच्छा करता है, तद्वत् = उसके समान ही, सः= वह, ऐसा, मन्दधीः = मन्दबुद्धि वाला, अहं = त्रिविक्रम भभ्भट्टः कविवृन्दारकायितुम् = श्रेष्ठ कविजन समूह का नेता बनना, इच्छामि = चाहता हूँ।

हिन्दी अनुवाद–जिस प्रकार लंगड़ा बगुला अज्ञानता से हंस के समान सुन्दर चाल चलना चाहता है उसी प्रकार मन्दबुद्धि वाला मैं त्रिविक्रमभट्ट कवि वृन्द मैं अग्रगण्य बनना चाहता हूँ।

अलङ्कार –यहाँ उपमा तथा अनुप्रास अलङ्कार हैं।

छन्द – यहाँ अनुष्टुप् वृत्त है।

17.5 सारांश

मङ्गलाचरण भारतीय परम्परा में किसी भी कार्य की समाप्ति हेतु किया जाता है। कविकर्म की निर्विघ्न पूर्णता के लिए मङ्गल किया जाता है। ग्रन्थ के आदि में, मध्य में तथा अन्त में मङ्गल का उच्चारण करना चाहिए। इसी का त्रिविक्रम भट्ट पालन करते हैं। यह मङ्गल नमस्कारात्मक, वस्तुनिर्देशात्मक तथा आशीर्वादात्मक तीन प्रकार का होता है।

इसी क्रम में आगे चलकर महाकवि त्रिविक्रम भट्ट अपने पूर्व महाकवियों का आदर पूर्वक स्मरण करते हैं, जिसमें वाल्मीकि, व्यास, गुणाढ्य तथा महाकवि बाण का एक–एक पद्य में वर्णन करते हैं। इसमें कवि की निरहंकारिता, दम्भ राहित्य, भी द्योतित होता है। सभी कवियों को विभिन्न विशेषणों द्वारा सम्मानित करते हुए एक प्रकार से उनके प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हैं और तत्पश्चात् महाकवि त्रिविक्रम भट्ट अपने वंश के वर्णन से पूर्व रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि महाभारत के प्रणेता व्यास अपने वंश का अत्यन्त लालित्यपूर्ण शैली में वर्णन करते हैं।

17.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. नल चम्पू – चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
2. नल चम्पू – प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास– आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन वाराणसी
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास– वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी–2009
5. काव्य प्रकाश – ज्ञानमण्डल लिमिटेड–वाराणसी
6. काव्य प्रकाश – भण्डारकर प्राच्यविधा संशोधन मन्दिर, पुणे
7. साहित्यदर्पण – चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
8. वृत्तरत्नाकर – आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
9. अमरकोश– चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, जवाहर नगर, बंगलोरोड, दिल्ली

17.7 अभ्यास प्रश्न

अभ्यास प्रश्न -1

क) सही अथवा गलत लिखें –

I. मंगलाचरण तीन प्रकार का होता है ।

II. ग्रंथ के आदि, मध्य और अंत में मंगलाचरण करना चाहिए ।

III. नल चंपू में मंगलाचरण अंत में किया है ।

IV. लंगड़ा बगुला हंस के सामान सुंदर चाल चलना चाहता है ।

अभ्यास प्रश्न -2

ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

I. नल चंपू सभी के कल्याण की बात ———————— मंगलाचरण में की जाती है ।

II. का मंगलाचरण———————— है ।

III. ———————— को मंदबुद्धि वाला कवि बताया है ।

IV. भारतीय परंपरा में ————————किया जाता है ।

अभ्यास प्रश्न -3

ग) एक शब्द में उत्तर दीजिए -

I. खर दूषण का वर्णन वाल्मीकि ने किसमे किया है ?

II. महाभारत के रचयिता का नाम बताएं ?

III. पार्वती किसकी पुत्री हैं ?

IV. यज्ञ कर्म में निपुण किस ऋषि का वंश है ?

अभ्यास प्रश्न –4

I. त्रिविक्रम भट्ट का व्यक्तित्व, कृतित्व प्रस्तुत कीजिए।

II. पठित इकाई से एक अनुष्टुप् पद्य लिखिए।

III. किसी एक पद्य की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए।

IV. चम्पू काव्यों में नल चम्पू का स्थान निर्धारित कीजिए।

V. अनुष्टुप् छन्द का लक्षण, उदाहरण दीजिए।

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखे ।